

16/2/26

परील परी उप। प्रति. सं. 2-3 की लकी ले-
पंजीहत सदा प्रकृत नही डिने हों परावली लकी
अयाव में खरिज की जाती हों लंघ से लक हो
आवेष्टा सुगम गमा

उपखण्ड अधिकारी
सूरतगढ़ (राज.)



GCMs
2022/5362